2 सन्धि-ज्ञान
(स्वर एवं व्यंजन संधियों का परिचय)

विद्या + आलय = विद्यालय । इति + आदि = इत्यादि। जगत् + ईश = जगदीश। इन शब्दों को यदि शीघ्रता से पढ़ा जाय तो पृथक्-पृथक् उच्चारण नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में उनका मिल-जुलकर नया उच्चारण होता है। इस नये उच्चारण में जो परिवर्तित ध्वनि बन जाती है, उसे सन्धि के द्वारा बना हुआ मानते हैं। इस प्रकार 'सन्धि' शब्द का अर्थ है–जोड़ अथवा मेल। सन्धि शब्दों के मिले हुए उच्चारण का एक रूप है, अत: दो शब्दों के मिलने से जो वर्ण सम्बन्धी परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि के भेद–सन्धि के तीन भेद हैं–

१. स्वर सन्धि (अच् सन्धि)–जब पहले शब्द का अन्तिम स्वर दूसरे शब्द के आदि स्वर से मिलता है, तो इसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे–

देव + आलय: = देवालय: = अ + आ = आ।

२. व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)–जब पहले शब्द का अन्तिम व्यञ्जन दूसरे शब्द के आदि व्यञ्जन या स्वर से मिलता है, तो इसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे–दिक् + गज = दिग्गज (क् + ग = ग्ग)

३. विसर्ग सन्धि–जब व्यञ्जन का विसर्ग में या विसर्ग का व्यंजन में परिवर्तन होता है, तो विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे–प्राय: + चित = प्रायश्चित्।

स्वर (अच्) सन्धि

स्वर अनेक हैं और उनके अलग-अलग मिलने के अनुसार अलग-अलग सन्धियाँ होती हैं,

जैसे– दीर्घ सन्धि, गुण सन्धि, यण सन्धि, वृद्धि सन्धि, अयादि सन्धि।

1. दीर्घ सन्धि

सूत्र–''अक: सवर्णे दीर्घ:।''

यदि ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ ही आवे तो उनके स्थान पर दीर्घ हो जाता है।

जैसे– (१) अ या आ के बाद अ या आ आने पर = आ

धन + अर्थी	= धनार्थी	=	अ + अ = आ
दैत्य + आकार:	= दैत्याकार:	=	अ + आ = आ
विद्या + अर्थी	= विद्यार्थी	=	आ + अ = आ
राम + अवतार:	= रामावतार:	=	अ + अ = आ
तथा + अपि	= तथापि	=	आ + अ = आ

(२) इ या ई के बाद इ या ई आने पर = ई

क्षिति + ईश:	= क्षितीश:	=	इ + ई = ई
गिरि + ईश:	= गिरीश:	=	इ + ई = ई
श्री + ईश:	= श्रीश:	=	ई + ई = ई

(३) उ या ऊ के पश्चात् उ या ऊ= ऊ
वधू + उत्सवः = वधूत्सवः
लघु + उर्मिः = लघूर्मिः
भानु + उदयः = भानूदयः
साधु + उक्तम् = साधूक्तम्
गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः
विधु + उदयः = विधूदयः

(४) ऋ या ॠ के पश्चात् ऋ या ॠ = ॠ
मातृ + ऋणम् = मातॄणम्
होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

अभ्यास-प्रश्न-1

१. सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
सूर्यास्तम्, धनार्थी, महात्मा, नदीशः, रवीन्द्रः, महीशः,कपीशः, पुस्तकालयः, देवालयः, दिवाकरः, तथापि, देवर्षिः, लघूर्मिः भानूदयः।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
विद्या + अर्थी, क्षेत्र + अधिकारः, गिरि + ईशः, पितृ + ऋणम्, विधु + उदयः, सु + उक्तिः, हरि + ईशः, हिम + अद्रिः।

३. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य पर सही (✔) का चिह्न लगाइए–
१. दीर्घ और ह्रस्व स्वर मिलने पर दीर्घ होता है।
२. ह्रस्व और दीर्घ स्वर मिलकर दीर्घ नहीं होता।
३. ई + इ और इ + ई मिलने पर ई नहीं होता।
४. उ + ऊ = ऊ होता है।

४. (१) ऋ और ऋ मिलकर क्या बनेगा?
(२) 'आ' का 'अ' से योग होने पर क्या बनेगा?
(३) ऐसे दो शब्द बताइये जिनके अन्त में दीर्घ ई हो तथा उनसे मिलने वाले के शुरू में भी दीर्घ ई हो।
(४) ऐसे दो शब्द मिलाइए जिनमें दोनों ओर ह्रस्व 'इ' हो।
(५) अक् प्रत्याहार से क्या समझते हैं?

2. गुण सन्धि

सूत्र–''आद्गुणः''

यदि अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ उ ऋ और ऌ आते हैं, तो दोनों मिलकर क्रमशः ए, ओ, अर् और अल् गुण हो जाता है।

जैसे–

सुर + ईशः = सुरेशः	=	अ + ई = ए
उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः	=	अ + इ = ए
राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः	=	आ + इ = ए
रमा + ईशः = रमेशः	=	आ + ई = ए
हित + उपदेशः = हितोपदेशः	=	अ + उ = ओ
महा + उत्सवः = महोत्सवः	=	आ + उ = ओ
पीन + ऊरुः = पीनोरुः	=	अ + ऊ = ओ
गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः	=	आ + ऊ = ओ

देव + ऋषिः = देवर्षिः	=	अ + ऋ = अर्
महा + ऋषिः = महर्षिः	=	आ + ऋ = अर्
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः	=	अ + ऋ = अर्
तव + ऌकारः = तवल्कारः	=	अ + ऌ = अल्
गंगा + उदकम् = गंगोदकम्	=	आ + उ = ओ
नर + इन्द्रः = नरेन्द्रः	=	अ + इ = ए
सूर्य + उदयः = सूर्योदयः	=	अ + उ = ओ

अभ्यास-प्रश्न-2

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
महा + उत्सवः, रमा + ईशः, महा + इन्द्रः, भाग्य + उदयः, विद्या + उन्नतिः, सुर + इन्द्रः, जल + ऊर्मि, महा + ऋषिः, महा + ऌकारः, तव + लकारः, ग्रीष्म + ऋतुः।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
रमेशः, सूर्योदयः, हितोपदेशः, तवेदम्, भुवनेशः, महोदयः, महोत्सवः, महेशः, राजेशः, राजर्षिः, भाग्योदयः, जलोर्मिः, देवर्षिः, तवल्कारः।

३. निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–
(१) अ + ऌ मिलकर 'अल्' रूप बनता है।
(२) ऌकारः में आदि स्वर ऌ है।
(३) कवीन्द्रः तथा रवीन्द्रः में गुण सन्धि है।
(४) देवर्षि में ऋ के कारण र् आया है।

स्वर सन्धि दर्पणम्

सन्धि का नाम	सूत्र	नियम	सिद्धान्त	उदाहरण
१. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ से अ, इ, उ, ऋ मिलने पर दीर्घ हो जाता है।	अ, आ + अ, आ = आ। इ, ई + इ, ई = ई। उ, ऊ+उ, ऊ =ऊ। ऋ+ऋ= ॠ।	दैत्य+आकारः = दैत्याकारः। रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः। लघु+ऊर्मिः = लघूर्मिः। होतृ+ऋकारः = होतॄकारः।
२. गुण सन्धि	आद्गुणः	अ या आ के बाद इ, उ, ऋ आने पर क्रम से ए,ओ, अर् हो जाते हैं।	अ, आ+इ,ई=ए। अ, आ+उ,ऊ=ओ। अ, आ+ऋ= अर्।	उप+इन्द्रः= उपेन्द्रः। पीन+ऊरुः=पीनोरुः। देव+ऋषिः= देवर्षिः
३. यण् सन्धि	इकोयणचि	इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान स्वर आने पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है।	इ, ई+असमान स्वर= य्। उ, ऊ + असमान स्वर=व्। ऋ+असमान स्वर = र्। ऌ + असमान स्वर = ल्।	अभि+उदयः=अभ्युदयः। वधू+आदेशः=वध्वादेशः। धातृ+अंशः=धात्रंशः। ऌ+ आकृतिः=लाकृतिः।
४. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	अ, आ के बाद ए, ऐ, ओ, औ आने पर ऐ, औ हो जाते हैं।	अ, आ+ए, ऐ=ऐ। अ, आ+ओ, औ=औ।	मत+ऐक्यम्=मतैक्यम्। दिव्य+औषधिः=दिव्यौषधिः।
५. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	ए, ऐ, ओ, औ के बाद स्वर आने पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाता है।	ए+स्वर = अय्। ऐ+स्वर= आय्। ओ+स्वर= अव्। औ+स्वर = आव्।	ने+अनम्= नयनम्। नै+ अकः=नायकः। पो+इत्रम= पवित्रम्। पौ+अनः= पावनः।

3. यण् सन्धि

सूत्र– ''इकोयणचि''

यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ऌ के बाद असमान स्वर आये तो इ, उ, ऋ, ऌ के स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् (यण् प्रत्याहार) हो जाता है। **इकोयणचि** (इकः + यण् + अचि) का अर्थ ही है कि इक् के बाद यदि कोई अच् हो, तो उसके स्थान पर यण् हो जाता है।

जैसे–	अभि + उदयः = अभ्युदयः	=	इ + उ = य्
	यदि + अपि = यद्यपि	=	इ + अ = य्
	इति + आदि = इत्यादि	=	इ + आ = य्
	सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः	=	ई + उ = य्
	नदी + ऊर्मिः = नद्यूर्मिः	=	ई + ऊ = य्
	मधु + अरिः = मध्वरिः	=	उ + अ = व्
	सु + आगतम् = स्वागतम्	=	उ + आ = व्
	वधू + आदेशः = वध्वादेशः	=	ऊ + आ = व्
	पितृ + आदेशः = पित्रादेशः	=	ऋ + आ = र्
	धातृ + अंश = धात्रंशः	=	ऋ + अ = र्
	ऌ + आकृतिः = लाकृतिः	=	ऌ + आ = ल्
	प्रति + एकम् = प्रत्येकम्	=	इ + ए = ए
	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	=	ऋ + आ = र्

अभ्यास-प्रश्न-3

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

प्रति + एकम्, यदि + अपि, नदी + आवेगः, अति + उदारः, मधु + अरिः, अभि + उदयः, इति + एकम्, सुधी + आगमनम्, हरि + आज्ञा, पितृ + आज्ञा, यदि + एकम्, अति + आचारः।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

यद्यपि, प्रत्येकम्, इत्यादि, भ्वादिः, इत्याह, गुर्वाज्ञा, अभ्युदयः, सुध्युपास्यः, अध्यादेशः, अन्वयः, मात्रादेशः, वध्वादेशः, लाकृतिः।

३. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. सुध्युपास्यः में यण सन्धि है।
२. स्वागतम् में दीर्घ सन्धि होती है।
३. नद्यावेगः, पित्रादेशः में एक ही सन्धि है।
४. तवल्कारः में यण सन्धि है।
५. इक् का अर्थ इ उ ऋ ऌ होता है।

4. वृद्धि सन्धि

सूत्र– ''वृद्धिरेचि''

यदि अ या आ के बाद ए या ऐ आता है तो दोनों मिलकर 'ऐ' और ओ या औ के आने पर 'औ' हो जाता है।

जैसे– मा + एवम् = मैवम् = आ + ए = ऐ।

पञ्च + एते = पञ्चैते = अ + ए = ऐ।
सदा + एव = सदैव = आ + ए = ऐ।
विद्या + ऐश्वर्यम् = विद्यैश्वर्यम् = आ + ऐ = ऐ
जल + ओघः = जलौघः = अ + ओ = औ
कन्या + ओदनम् = कन्यौदनम् = आ + ओ = औ
वन + औषधिः = वनौषधिः = अ + औ = औ
महा + औषधिः = महौषधिः = आ + औ = औ
वन + औकसः = वनौकसः = अ + औ = औ
गङ्गा + औधः = गङ्गौधः = आ + औ = औ

अभ्यास-प्रश्न-4

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

मम + औत्सुक्यम्, एक + एकम्, तस्य + ओषधिः, तव + औदार्यम्, अधुना + एव, अत्र + एव, कदा + एव, कन्या + ओदनम्, सुर + ऐश्वर्यम्, लता + एषा।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

जलौघः, सदैव, अधैव, अत्रैव, तथैव, विद्यैश्वर्यम्, कन्यौदनम्, ममैकः, उष्णौदकम्, महौषधिः, तस्यैव, वनौषधिः, पञ्चैते, मैवम्।

३. यण् और वृद्धि सन्धि में अन्तर बताइये।

४. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. अत्रैव, तवैव में एक ही सन्धि है। ( )
२. वसुधैव में यण् सन्धि है। ( )
३. सीतौदार्यम् में वृद्धि सन्धि है। ( )
४. तवौषधालयः तथा उष्णौदनम् में वृद्धि सन्धि नहीं है। ( )

5. अयादि सन्धि

सूत्र– ''एचोऽयवायावः''

यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई स्वर आता है, तब 'ए' के स्थान में 'अय्', 'ओ' के स्थान में 'अव्', 'ऐ' के स्थान में 'आय्', 'औ' के स्थान में 'आव्' आदेश हो जाता है।

जैसे– शे + अनम् = शयनम् = ए + अ = अय्
संचे + अनम् = संचयनम् = ए + अ = अय्
भो + अनम् = भवनम् = ओ + अ = अव्
पो + अनः = पवनः = ओ + अ = अव्
नै + अकः = नायकः = ऐ + अ = आय्

गै + अनम् = गायनम् = ऐ + अ = आय्
पौ + अक: = पावक: = औ + अ = आव
श्रौ + अक: = श्रावक: = औ + अ = आव्
पौ + अन: = पावन: = औ + अ = आव्
गै + अक: = गायक: = ऐ + अ = आय

अभ्यास-प्रश्न-5

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
चे + अनम्, लो + अण:, नौ + इक:, हरे + ए, गुरो + ए, भो + अति, मुने + ए, गो + एषणा।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
पवन:, नाविक:, भावुक:, शयनम्, नयनम्, पवित्रम्, चयनम्, नायक:, सायक:, श्रावक:, लवण:, पावक:।

३. अयादि और वृद्धि सन्धि में अन्तर बताइये।

४. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–
१. भवनम्, गायनम् में अयादि सन्धि है। ( )
२. भो + अ + ति = भवति होता है। ( )
३. एकैकम् में अयादि सन्धि है। ( )
४. सुरेश:, रवीन्द्र, में अयादि सन्धि हैं। ( )

व्यञ्जन (हल्) सन्धि

व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर व्यञ्जन सन्धि होती है।

जैसे– सत् + चित = सच्चित्, जगत् + ईश्वर: = जगदीश्वर:। यहाँ पहले उदाहरण में 'त' के बाद व्यञ्जन और दूसरे उदाहरण में व्यञ्जन के बाद स्वर आया है।

व्यञ्जन सन्धि के भेद

१. श्चुत्व सन्धि, २. ष्टुत्व सन्धि,
३. जश्त्व सन्धि, ४. चर्त्व सन्धि,
५. अनुस्वार सन्धि, ६. परसवर्ण सन्धि।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र– ''स्तोः श्चुना श्चुः''

सकार या त वर्ग (त, थ, द, ध, न) के साथ शकार या च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) का योग होने पर 'स' का 'श' तथा त वर्ग का च वर्ग हो जाता है। **स्तोः** का अर्थ है स् और त वर्ग का, **श्चुना** का अर्थ है श् और च वर्ग के साथ तथा **श्चुः** का अर्थ है श् और च वर्ग हो जाता है।

जैसे–
सत् + चित् = सच्चित्
रामस् + शेते = रामश्शेते
कस् + चित् = कश्चित्

सद् + जनः	=	सज्जनः
शार्ङ्गिन + जयः	=	शार्ङ्गिञ्जयः
बृहद् + झरः	=	बृहज्झरः
उत् + चारणम्	=	उच्चारणम्।

अभ्यास-प्रश्न-6

१. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

सत् + मार्ग, जगत् + जननी, कस् + चित्, सत् + चित्, कवेस् + चमत्कारः, महत् + जालम्, उत् + ज्वलम्, विपद् + जालम्, तपस् + चरणम्, तत् + चलति, मत् + चित्तम्, कत् + चित्, नस् + छलः, हरिस् + चन्द्रः, भगवत्+ चरितम्।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

उच्चारणम्, सच्चरित्रम्, उज्ज्वलम्, सज्जनः, विद्युज्ज्वाला, मज्जयः, निश्चितम्, मनश्शीतलम्, इतश्चर्चा, अनुचरश्चिनोति, जगज्जननी, शरच्चन्द्रः निश्छलम्, तच्छविः, महच्छत्रुः एतज्जलम्, उच्छेदः।

३. 'स्तोः श्चुना श्चुः' सूत्र की व्याख्या करिये।

४. निम्नलिखित में शुद्ध कथन पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

१. सत् + जनः मिलकर सज्जनः बनता है।
२. मध्वरिः में मधु + अरिः होता है।
३. उच्चारणम् में स्वर सन्धि है।
४. 'रामश्शेते' का सन्धि विच्छेद 'रामस् +शेते' होता है।
५. सच्चित्, सच्चरित्रम् दोनों में एक ही सन्धि है।

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र– ''ष्टुनाष्टुः''

स् अथवा त वर्ग (त थ द ध न) के योग में ष् अथवा ट वर्ग (ट ठ ड ढ ण) के आने पर स् का ष् तथा त वर्ग के स्थान पर ट वर्ग हो जाता है।

जैसे–	रामस् + टीकते	=	रामष्टीकते (स् के स्थान पर ष्)।
	मत् + टीका	=	मट्टीका (त् के स्थान पर ट्)।
	रामस् + षष्ठः	=	रामष्षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)।
	उद् + डयनम्	=	उड्डयनम् (द् के स्थान पर ड्)।
	तत् + टीका	=	तट्टीका (त् के स्थान पर ट्)।
	कृष् + नः	=	कृष्णः (न् के स्थान पर ण)।

अभ्यास-प्रश्न-7

१. उदाहरण सहित सूत्र की व्याख्या करिये।

२. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

दृष्टः, तट्टीका, भवट्टीका, एतट्टंकितम्, हरिष्टीकते, उड्डयनम्।

३. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–

शिवस् + टीकते, मुनिस् + षष्ठः, रामस् + षष्ठः, इष् + तम, उत् + डीयते।

४. निम्न में शुद्ध वाक्य पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

(१) ड् ट वर्ग का तीसरा वर्ण है। (२) मत् + टीका = मद् टीका होता है।

(३) सत् + जन: = सज्जन: नहीं होता। (४) धनुष् + टंकार: = धनुषटंकार: होता है।

(५) रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति होता है।

3. जश्त्व सन्धि

(अ) सूत्र– ''झलां जशोऽन्ते''

झल् प्रत्याहार (वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण तथा श, ष, स, ह) के बाद स्वर या व्यञ्जन के आने पर जश् प्रत्याहार (वर्गों का तीसरा वर्ण) हो जाता है।

जैसे– जगत् + ईश: = जगद् +ईश: = जगदीश: (क वर्ग का तृतीय वर्ण)

सत् + गति = सद् +गति = सद्गति (त वर्ग का तृतीय वर्ण)

अच् + अन्त: = अज् +अन्त: = अजन्त: (च वर्ग का तृतीय वर्ण)

सुप् + अन्त: = सुब् + अन्त: = सुबन्त: (प वर्ग का तीसरा वर्ण)

वाक् + ईश: = वाग् + ईश: = वागीश: (क वर्ग का तृतीय वर्ण)

मधुलिट् + गुंजति = मधुलिड् + गुंजति = मधुलिड्गुंजति (ट वर्ग का तीसरा वर्ण)।

(ब) सूत्र– ''झलां जश् झशि''

झल् प्रत्याहार (वर्गों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वर्ण तथा श, ष, स, ह) के बाद झश् (किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण) आये, तो पहले वाले व्यञ्जन जश् प्रत्याहार (अपने वर्ग के ज्, ब्, ग्, ड्, द्) में बदल जाते हैं।

जैसे– दोघ् + धा = दोग्धा (घ् के स्थान पर ग्)

लभ् + ध: = लब्ध: (भ् के स्थान पर ब्)

योध् + धा = योद्धा (ध् के स्थान पर द्)

आरभ् + ध: = आरब्ध: (भ् के स्थान पर ब्)

वृध् + ध: = वृद्ध: (ध् के स्थान पर द्)

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र– खरि च

यदि झल् (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण) के बाद वर्ग का प्रथम व द्वितीय वर्ण या श, ष, स आता है तो उनके स्थान पर चर् (अपने वर्ग का प्रथम वर्ण) हो जाता है।

जैसे– सद् + कार: = सत्कार: एतद् + करोति = एतत् करोति

सद् + पात्रम् = सत्पात्रम् दिग् + पाल: = दिक्पाल:

तज् + छिव: = तच्छिव:

5. अनुस्वार सन्धि

सूत्र– मोऽनुस्वार:

पदान्त में 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन आता है, तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार (ं) हो जाता है, किन्तु जब 'म्' के बाद कोई स्वर आता है तो म् स्वर वर्ण में मिलकर पूर्ण रूप ले लेता है।

जैसे– हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे नगरम् + आयाति = नगरमायाति

त्वम् + करोषि = त्वं करोषि माम् + एवम् = मामेवम्

रामम् + भजामि = रामं भजामि अहम् + इति = अहमिति

6. परसवर्ण सन्धि

सूत्र– अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः

अनुस्वार से परे यदि यय् प्रत्याहार (श्, ष्, स्, ह् के अतिरिक्त सभी व्यञ्जन यय् प्रत्याहार में आते हैं) का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार का परसवर्ण हो जाता है। अर्थात् पद के मध्य में अनुस्वार के आगे श्, ष्, स्, ह् को छोड़कर किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम् वर्ण हो जाता है; यथा–गम् + गा = गंगा या गङ्गा।

विशेष–यह नियम प्रायः अनुस्वार सन्धि के पश्चात् लगता है। पदान्त में यह नियम विकल्प से होता है; यथा—कार्यम् + करोति = कार्यं करोति या कार्यङ्करोति।

जैसे– शाम् + तः = शान्तः
कुन् + ठितः = कुण्ठितः
अन् + चितः = अञ्चितः

अन् + कितः = अङ्कितः
गुम् + फितः = गुम्फितः

पदान्त में होने पर–

अलम् + चकार = अलं चकार या अलञ्चकार
रामम् + नमामि = रामं नमामि या रामन्नमामि
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि या त्वङ्करोषि

अभ्यास-प्रश्न-8

१. **निम्नलिखित में सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
वाग्दानम्, दिगन्तः, जगदीशः, सद्बन्धुः, उद्गमिष्यति, जगदाधारः, दिगीशः, चिद्रूपम्, चिदानन्दः, बुद्धिः, सिद्धः, शुद्धि, षड्दर्शनम्, दिगम्बरः, अजन्तः, भवद्ज्ञानम्।

२. **निम्नलिखित में सन्धि कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–**
तत् + एव, तत् + धनम्, सत् + गतिः, जगत् + ईशः, दिक् + अम्बरः, षट् + दर्शनम्, दिक् + गजः, अच् + अन्तः, सत् + धर्मः, अस्मत् + भारतम्, महत् + अन्तरम्, कृत + अन्तः, चित् + आनन्दः, दघ् + धः, बुध् + धम्, एतत् + धनम्।

३. **''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र की व्याख्या करिये।**

अभ्यास-प्रश्न

(क)१. सन्धि किसे कहते हैं?

२. निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
सदैव, गङ्गोदकम्, हरिश्शेते।

३. किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
वागीशः, अत्यल्पः, पशुश्चलति।

४. निम्न शब्दों में दीर्घ एवं गुण सन्धि के शब्दों को अलग कीजिए तथा उनका सन्धि-विच्छेद कीजिए–
सुरेशः, राजेन्द्रः, रामावतार, महोत्सवः, विद्याभ्यास, नदीशः, पितृणम्, वधूत्सवः, विद्यार्थी।

५. निम्नांकित में से किसी एक शब्द का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
लघूर्मिः, इत्यादि, सच्चरित्रम्।

६. निम्नांकित में से किसी एक शब्द का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम लिखिए–
साधूक्तम्, राजोवाच, बालकोऽयम्।

७. निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नामोल्लेख कीजिए–
लाकृति, ब्रह्मर्षि, सच्चित्।

८. किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
चमूर्जितम्, शयनम्, तपश्चर्या।

९. निम्नलिखित में से किसी एक का सन्धि-विच्छेद कीजिए तथा सन्धि का नाम लिखिए–
(अ) यद्यपि, नयनम्, तच्चितम्।
(ब) नदीशः, मुनिनोक्तम्, सदानन्दः।
(स) सुरेशः, सदैव, सच्चित्।
(द) देवैश्यर्म, जगदीश्वरः, रामश्चिनोति।
(य) वृकोदरः, नायकः, अन्यच्च।
(र) इतीव, इत्येव, इहैव।
(ल) गुर्वादेशः, वनौषधिः, गिरीशः।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के चार विकल्प दिये गये हैं। सही विकल्प चुनकर लिखिए–

१. 'दिगम्बरः' का सन्धि-विच्छेद है–
(अ) दिक् + अम्बरः (ब) दिग + अम्बरः (स) दिक + अम्बरः (द) दिग् + अम्बरः,

२. 'चयनम्' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होगा?
(अ) च + अनम् (ब) चय + नम् (स) चे + अनम् (द) चे + एनम्

३. 'गङ्गा + उदकम्' की सन्धि होती है–
(अ) गङ्गुदकम् (ब) गङ्गूदकम् (स) गङ्गोदकम् (द) गङ्गौदकम्

४. 'ओ' के बाद कोई स्वर आने पर 'ओ' का होगा–
(अ) अय् (ब) अव् (स) आव् (द) आय्

५. सकार का शकार से योग होने पर क्या बनेगा?
(अ) सकार का रकार हो जाता है।
(ब) सकार का शकार हो जाता है।
(स) सकार का सकार हो जाता है।
(द) सकार का विसर्ग हो जाता है।

६. अकार और आकार का योग होने पर होता है–
अ, आ, औ।

७. ऋ के बाद ऋ होने पर हो जाता है–
ऋ, ॠ, रा, रा।

८. 'स्वागतम्' में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) यण (स) गुण (द) वृद्धि

९. लो + अणः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) अयादि (स) यण (द) दीर्घ

१०. 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र है–
(अ) गुण सन्धि का (ब) दीर्घ सन्धि का (स) यण् सन्धि का (द) वृद्धि सन्धि का

११. 'गवेषणा' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) यण (स) अयादि (द) पररूप

१२. अच् + अन्तः होने पर क्या बनेगा?
(अ) अझन्तः (ब) अजःअन्तः (स) अगन्तः (द) अजन्तः

१३. महेशः में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) अयादि (द) पूर्वरूप

१४. 'इकोयणचि' सूत्र है–
(अ) गुण सन्धि का (ब) यण् सन्धि का (स) वृद्धि सन्धि का (द) दीर्घ सन्धि का

१५. उ के बाद आ आने पर हो जाता है–
(अ) वा (ब) व (स) वु (द) वे

१६. जलौधः में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) वृद्धि (द) यण्

१७. गुरु + उपदेशः की सन्धि होगी–
(अ) गुरोपदेशः (ब) गुरु उपदेशः (स) गुरुपदेशः (द) गुरेपदेशः

१८. 'सुध्युपास्यः' में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) यण् (स) वृद्धि (द) पूर्वरूप

१९. काव्योत्कर्ष में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) गुण (स) यण् (द) अयादि

२०. अ के बाद ए आने पर होता है–
(अ) ओ (ब) ऐ (स) औ (द) ए

२१. 'एचोऽयवायावः' सूत्र है–
(अ) यण् सन्धि का (ब) गुण सन्धि का (स) अयादि सन्धि का (द) जश्त्व सन्धि का

२२. परमौषधि में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि (स) यण् (द) दीर्घ

२३. मतैक्यम् में सन्धि है–
(अ) दीर्घ (ब) वृद्धि (स) यण् (द) अयादि

२४. जल + उपरि की सन्धि होगी–
(अ) जलोपरि (ब) जलूपरि (स) जलुपरि (द) जल्वूपरि

२५. मध्वरिः में सन्धि है–
(अ) गुण (ब) वृद्धि (स) यण् (द) अयादि

●●●